‘ अपना दर्द ’ कहानी में किन्नरों के जीवन का मार्मिक चित्रण

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे

सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभागप्रमुख,

श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय,शंकरनगर

तह- बिलोली, जि.- नांदेड

भ्रमणध्वनि -9881641369

शोधसार– ‘अपना दर्द’यह कहानी समाज का ऐसा एक वर्ग जो उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश है । जो किन्नर,तृतीय पंथी, हिजड़ा जैसे शब्दों से संबोधित किया जाता है। किन्नर भी एक मनुष्य है और उसे भी मनुष्यों की तरह जीने का अधिकार है। यह देश की सुप्रीम अदालत ने आदेशित किया है । किन्नरों के जीवन में जो त्रासदी है, उसका मार्मिक चित्र इस कहानी में अभिव्यक्त हुआ है। इस कहानी का जो मुख्य पात्र है राजू किन्नर है । मास्टर जी के घर राजू का जन्म होता है। जैसे-जैसे राजू बड़ा हो जाता है वैसे-वैसे राजू में एक आम मनुष्यों से भिन्न लैंगिक भाव प्रकट हो जाते हैं । वैसे-वैसे राजू के प्रति परिवार एवं समाज का रवैया बदल जाता है। अर्थात किन्नरों के प्रति हमारे समाज, परिवार की सम्मानजनक भावना नहीं होती। इसके कारण किन्नरों को कई प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। राजू जीवन में कई सारे संकटों के बावजूद हिम्मत से संघर्ष करते हैं। साथ ही उद्योग, व्यवसायों के माध्यम से अपना जीवन चलाते हैं। साथ ही साथ अपने जैसे दुर्बल,शोषित लोगों की सहायता भी करते हैं । जो मानव जाति के लिए पथ प्रदर्शित के रूप में भूमिका निभाते हैं ।

कुंजी शब्द– किन्नर, किन्नरों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति ,अपमान,विद्वेष की भावना, भेदभाव का दंश,पारिवारिक वियोग,

प्रस्तावना–

अपने देश के लोगों के हाथों सत्ता की प्राप्ति हो जाने से विकास की रफ्तार तेज होकर आर्थिक योजनाओं से मनुष्य के जीवन में उन्नति हुई । बढ़ते औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव से विभक्त कुटुंब पद्धति का उदय हुआ । जिसके कारण व्यक्तित्व के विकास निर्माण में प्रोत्साहन मिला परंतु पारिवारिक रिश्तों में विघटन के दर्द से मानव संस्कृति आहत हुई ।सृष्टि में स्त्री और पुरुषों का संतुलन ठीक से रहे, साथ ही मनुष्य जाति का वंश बढ़ता रहे, इस हेतु सामाजिक व्यवस्था में विवाह संस्था का निर्माण हुआ है। कभी-कभी ऐसे भी बच्चों का जन्म होता है जिसमें स्त्री और पुरुषों के जैविक गुण पाए जाते हैं। अर्थात जो स्त्री होते हैं ना पुरुष उनमें नर - मादा के जैसे हाव-भाव उत्पन्न हो जाते हैं । ऐसे बच्चों के प्रति जो उपेक्षा का बर्ताव किया जाता है ,वह चिंता का विषय होता है। एक संवेदनशील साहित्यकार उसे ही कहते हैं, जिसके साहित्य में समाज से उपेक्षित, वंचित और शोषितों के दर्द की अभिव्यक्ति होती है। विमर्शों का दौर चल रहा है। जो पारिवारिक ,सामाजिक विघटन के दर्द से आहत हो रहे हैं ,वे किन्नर साहित्य के हाशिए पर आए है । कई सारे विमर्शों की परंपरा में जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श,किसान विमर्श के जैसे ही किन्नर विमर्शों की उद्भावना साहित्य में प्रचलित हुई है। उसी के

समानांतर जो उपेक्षित जीवन जीने वाले किन्नरों के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और शारीरिक जीवन की पीड़ा,दर्द की मार्मिक अभिव्यक्ति हिंदी कहानियों में हो रही है ।

रचनाकार का परिचय–

'अपना दर्द'कहानी की लेखिका सफिया सिद्दीकी है जिसका जन्म 15 जून 1990 में कानपुर उत्तर प्रदेश में हुआ है। उनकी प्राथमिक शिक्षा से स्नातक तक की शिक्षा कानपुर में ही हुई है।अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम.ए. की पढ़ाई हिंदी में तथा क्रीमोलॉजी में पीजी डिप्लोमा वहीं से किया है। संस्कृत, अरबी,उर्दू आदि भाषा का ज्ञान इन्होंने अर्जित किया है । उनकी 'अपना दर्द' यह कहानी राजू नामक किन्नर के जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त करती है।उसी की अभिव्यक्ति निम्न रूप से हुई है ।

'अपना दर्द' कहानी में मुख्य रूप से राजू ही भूमिका में है।राजू मास्टर का लड़का है।घर पर माता -पिता और भाई बहन सभी मिलजुलकर रहते है।घर के सभी सदस्य सुख- दुखों के प्रसंगों में एक दूसरे से सहयोग करते है। राजू स्वभाव से नटखट है।जैसे- जैसे राजू बड़ा हो जाता है वैसे - वैसे शारीरिक बदलाव उनमें आते है। यह बदलाव सामन्य नहीं है परंतु इन बदलावों के परिणामों से चिंतित भी हो जाता है। राजू के अनैसर्गिक, हावभावों की वजह से पूरा परिवार चिन्तित है । राजू नर जाति का होकर भी स्त्रियों के जैसी हरकते करता है।इन कारणों से परिवार व सामाजिक स्तर पर निंदा का कारण बनता है।"किन्नर के रूप में पैदा होने के लिए ना तो किन्नर दोषी होता है और ना ही उसके जनक जननी ।किन्नर होना महज एक प्राकृतिक त्रुटि है ठीक वैसे ही जैसे कि शरीर के अंगों में विकार होना। शरीर के अन्य अंगों में त्रुटि के साथ पैदा होने वाले किसी बच्चों को समाज और परिवार सहज कर लेता है परंतु अगर किसी के घर पर हमला बच्चे का जब हो जाए तो मैं एक सामाजिक अवमूल्यन का कारण बन जाता है ,मातम से भी ज्यादा घातक"। 1 उपरोक्त संदर्भों से यही स्पष्ट होता है कि, हमारे घर ,परिवार एवं समाज में किन्नरों जैसी प्रवृत्ति वाले बच्चों को किसी भी प्रकार का मान- सम्मान नहीं मिलता बल्कि उनका विविध प्रकारों से अपमान, मजाक उडाया जाता रहा है।आदमी की सबसे बड़ी शक्ति परिवार होती है। परिवार के प्रोत्साहन से ही जीवन के बड़े-बड़े संकटों का बेड़ा पार किया जाता है । अपितु मनुष्य को यह शक्ति जीवन जीने की प्रेरणा परिवार एवं समाज से प्राप्त होती है। परंतु जो किन्नर भावना और निजी स्तर पर टूट जाता हैं उनके लिए समाज एवं परिवार ही जिम्मेदार रहे हैं।जिसके कारण उनमें शिक्षा का अभाव भी पाया जाता है। परंतु अपना दर्द कहानी का राजू पढ़ा लिखा है। राजू अच्छा- बुरा समझ लेता है । जब राजू श्यामा मौसी के साथ रहने लगता है तब से उसे नाच - गाना सीखना पड़ता है। जिस पर किन्नरों की उपजीविका चलती है।डॉ.चैनसिंह मीणा ने लिखा है कि, "निर्विवाद रूप से थर्ड जेंडर समाज प्राचीन काल से ही अनेक समस्याओं से ग्रसित रहा है। इस वर्ग से जुड़ी समस्याओं को कई आयामों में देखने का प्रयास हुआ है। सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र से जुड़ी हुई समस्याएँ इस वर्ग के जीवन को और दुष्कर बना देती है"।2 किन्नर किसी भी काम को ठीक से कर सकते हैं । किन्नरों के परंपरागत व्यवसायों में गाना- गाकर ही पैसा पाना और उस पर ही जीवन चलाना रहा है। नाचने और गाने की कला राजू को नहीं आती थी, पर मौसी के दबाव में नाच और गाना उसे सीखना पड़ता है। एक दिन राजू मौसी से कहता है की, "मौसी! मौसी हम यह काम नहीं करना चाहते? हमें क्यों सबके सामने नाचना गाना अच्छा नहीं लगता? हम कुछ और काम करना चाहती है।"3 कहा जाता है कि, व्यक्ति सफल तभी होता है जब वह स्वयं के प्रतिभा को पहचानता है। जबरदस्ती से लादा गया काम ठीक से नहीं हो पाता। राजू ने भी गलत रास्ता अपनाया है जिस कारण से उसे लौटना मुश्किल हो जाता है। राजू ने समाज और पारिवारिक विमुख हो जाता है। नाच ,गाने से पैसे पाना जिससे राजू को शर्म का एहसास होता है । परिणामस्वरुप राजू की ऐसे काम में उदासी वृत्ति देखकर मौसी डांट- फटकार सुनाती है कि, "तुझे कौन काम देगा ?कौन अपना बनाएगा, जहां पर

जाएगा वहां गाली ही खानी पड़ेगी।"4 उपरोक्त मौसी के संवाद ने हमारी सामाजिक ,आर्थिक व्यवस्था पर भी प्रश्न चिन्ह उपस्थित किए हैं । क्योंकि किन्नरों को भीख मांगने के लिए विवश करने वाली व्यवस्था की मतलबी, स्वार्थी प्रवृत्ति उजागर होती है। किन्नरों को सम्मान की दृष्टि से न देखने की प्रवृत्ति से उनमें हीन भावना का उदय हुआ है । जिससे उपजिविका चलाने हेतु गलत रास्ते को अपनाते हैं । जैसे इस कहानी की पारो नाम की किन्नर ने राजू को बुरे काम करने से समय-समय पर सावधान भी किया है।इस व्यवसाय में अनैतिक ,भ्रष्ट, बुरे कामों में लिप्त किन्नरों का होना यह दर्शाता है कि, किन्नरों से काम लेने वाले बड़े-बड़े षड्यंत्रों का पर्दाफाश भी कहानी में हुआ है। जैसे ,"इन लोगों को हम जानती है ।यह क्या काम करती है, बहुत ही बुरी है। यह रात के अंधेरे में लोगों को चाकू दिखाकर लूट लेती है।"5 कुछ अपराधिक लोग लूट, डकैती जैसी घटनाओं को अंजाम देने में भी किन्नरों का इस्तेमाल करते है। साथ ही कुछ लालची किन्नर भी इस व्यवसाय में सहभागी होते हैं। उनके कारण अच्छे लोग भी बदनाम होते हैं। सीमा और रेखा यह जो दो किन्नर है वे राजू के साथ रहने लगती हैं । तब वे दोनों राजू को भी अपने कामों में शामिल करना चाहती है । परंतु पारो जैसी किन्नर अच्छे स्वभाव होती है । जिस पर अच्छे संस्कार हुए है। साथ ही आर्थिक सहयोग देकर राजू के जीवन में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राजू बड़े शहर में आकर बनाए सिंगार का काम करता है। उससे बहुत पैसे मिलते है। अपने नाम के साथ-साथ राजू पैसा भी कमाता है और इज्जत भी । मौसी से दूर दूसरे शहर में रहकर राजू ने बनाए सिंगार का काम शुरू किया होता है। तब कुछ दिनों के बाद मौसी की मृत्यु का समाचार सुनकर राजू अनाथ हो जाता है । मौसी को राजू अपनी माता के समान मानता है । राजू अपने जीवन में जो प्रतिष्ठा पाया है, जीने के लिए जिसने पथप्रदर्शित किया है वह मौसी की ही प्रेरणा रही है । कहते हैं कि, इस दुनिया में अच्छे इंसान भी है। इंसान इंसानों की सहायता करें तो उससे बड़ा कोई भगवान नहीं है। मनुष्य में ही दो रूप होते हैं । भगवान और दानव का रूप आदमी में पाया जाता है । जिस रूप में वह सहायता करता है उसी प्रकार की जिदंगी में बदलाव आता है। मौसी उदार स्वभाव की है । किन्नर होकर भी राजू को सभी प्रकार की सहायता करती है जो व्यवसाय में सहायक है। मौसी का यही सत्कार्य रहा है कि, अपने जैसी वेदना, पीड़ा राजू को न हो, इस दलदल से बाहर निकले उनकी सदिच्छा रही है। इस प्रकार कहानी में राजू आगे चलकर मौसी से प्रेरणा लेकर अपने जैसे लोगों के जीवन का दर्द दूर करने का संकल्प करता है। उसे आशा है कि, परिवार और समाज की सोच में बदलाव आएगा और किन्नरों के जीवन का दर्द कम होता जाएगा।

अपने जीवन की घटी हुई घटनाओं को भूल जाना मुश्किल होता है । राजू भी अपने पारिवारिक सदस्यों को याद करता है।परिवार से कितना भी डर रहे पर अपनों की याद उसे बेचैन करती है। कहा जाता है कि, एक बार गलत निर्णय लिया तो पीछे मुड़कर नहीं देखा जाता । इस बदले हुए रूप को देखकर राजू की भिन्न-भिन्न प्रकारों से भर्त्सना की जाती है।सभी लोगों ने राजू को हिजड़ा कहकर उसके चरित्र की धज्जियां उड़ाई। अपने माता-पिता, भाई की याद आती है ऐसे में राजू दोबारा अपने माता-पिता से गांव मिलने को आते है। तब राजू को देखकर लोग उपरोक्त प्रकार की बातें करते हैं। बच्चा कितना भी होशियार हो परंतु उसमें हिजड़े के गुण हैं तो उसे बर्दाश्त नहीं किया जाता।"प्रकृति की मार खाए बच्चों को पालना हंसी मजाक नहीं है यह दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मंदबुद्धि और विकलांग बच्चों को तो समाज बर्दाश्त कर लेता है लेकिन हिजड़े को नहीं ।" 6 समाज के अत्यधिक डर से राजू जैसे बच्चे ना जी लेते है ना उन्हें मौत स्वीकार कर लेती है बल्कि विवश, बेबस का जीवन मजबूर होकर जीना पड़ता है। ऐसे में गांववाले और परिजनों के भय से माता-पिता बेटे को विवश होकर कहते है। कि ,"तू यहां क्यों आया ?वही चला जा जहां,से आया।"7 तात्पर्य यह है कि,किन्नर एक बार परिवार से बिछड़ जाते हैं, तो दोबारा अपने परिवार और घर से लौटकर नही आ सकते है। हमारा समाज उसे स्वीकार ही नहीं करता। जिससे यह स्पष्ट होता है कि, सामाजिक स्तर पर

सम्मानजनक स्थान उन्हें नहीं मिल पाता । सामाजिक डर से किन्नरों का जीवन कष्ट का बना हुआ है । किन्नरों के प्रति जो भेदभाव का रवैया अपनाया जाता है उस कारण भी वे त्रासदी का जीवन जी लेते है। जीवन जीने के क्षेत्रों में उन्हें उचित स्थान नहीं मिल पाता । अपना दर्द इस कहानी में किन्नरों के जीवन की जो त्रासदी है, वह परिवार एवं सामाजिक के कारण ही अधिक रही है। राजू की हरकतों से परिवार तो पहले से ही परिचित था । परंतु जैसे ही राजू की स्त्रियों जैसी रहन-सहन और हरकतो की चर्चा गांव में फैल जाती है तब से राजू तथा उनके परिवार की नींद उड़ जाती है । चारों ओर राजू के परिवार की निंदा होती है। इतना ही नहीं गांव के सज्जन द्वारा कही गई बात, "मैं तो ऐसे बेटे को घर से निकाल देता"।8 पूरे मानवीय रिश्तों की धज्जियां उड़ा देती है। जैसे-जैसे मनुष्य ने प्रगति कर ली है,उसके दुष्परिणाम भी मानवीय रिश्तों पर हो रहे हैं । राजू भी एक मनुष्य है। भले ही राजू किसी शारीरिक विकारों से जूझ रहा है परंतु दुख में राजू को सहयोग करना आवश्यक था ।परंतु वर्तमान में सब रिश्तों में खोखलेपन, कोरी सहानुभूतिपूर्वक का प्रदर्शन हो रहा है। राजू जैसे होनहार बच्चों को परिवारों के वियोग से परिणाम झेलने पड़ते हैं ।

स्त्री बन जाना या पुरुष बन जाना यह प्राकृतिक देन है । इससे भी जो आधा - अधूरा है अर्थात अर्धनारीश्वर है। ऐसे जन्मे बच्चों का कोई दोष न होकर भी परिवार एवं समाज अपने व्यवहारों से जीना मुश्किल करता है। यह समाज व्यवस्था जिने हेतु सहायता तो नहीं करती बल्कि घर,परिवार का त्याग करने मजबूर करती है । जैसे राजू को भी अपने घर, परिवार का त्याग करना पड़ता है । राजू का अपने परिवार से प्रेम है पर मजबूर होकर किन्नरों की बस्ती में रहने जाना पड़ता है। अपरिचितों के साथ रहना पड़ता है । उसे ही अपना समाज मानकर उसी में जिंदगी काटनी पड़ती है । जैसे "का बेटा हम जानती है कि, तुम कोई बच्चे नहीं जो अपने मां-बाप से खो जाओ और हम देखते हैं ही समझ गई थी तू तो हम में से एक है।"9 वर्तमान समाज में जाति, पंथ, वर्ग के भेद पहले से प्रचलित है। बल्कि संतों और समाज सुधारकों का योगदान सामाजिक भेदभाव के विचारों को मिटाने का रहा है । भारतीय संविधान में सभी जाति और धर्मो को समान रूप से अधिकार दिए गए हैं। फिर भी सामाजिक स्तर पर सभी अपने समाज से ही रिश्ते जोड़े रखना चाहते है। इसी संकीर्ण विचारों के परिणाम से एक समाज दूसरे समाज से अंतर बना लेने की ओर पृवृत होता है।राजू जैसे किन्नरों को दूसरे समुदायों में वह सम्मान नहीं मिलता जिस प्रकार सामान्य व्यक्ति को मिलता है। एक मनुष्य होकर भी दूसरे मनुष्य को सहारा नहीं देना मनुष्य जाति की हार है। बल्कि अपनों से ही विभिन्न किन्नरों के साथ अन्यायपूर्ण बर्ताव किया जाता है। मोनिका शर्मा अपने उपन्यास में कहती है कि, "किन्नर पैदा हो जाता है उसको रखना सबसे बड़ी समस्या है समाज की इस समस्या को बड़ी बीमारी बनाने वाले कुछ तो रिश्तेदार और पड़ोसी ही होते हैं"।10 जिससे तंग आकर राजू जैसे किन्नरों की बस्ती में रहने जाता है तो वहां तौर -तरीके भी उसे सीखने पड़ते हैं । समाज में ऐसे वंचित ,शोषित और बहिष्कृत व्यक्ति को सम्मानित जीने का अधिकार न मिल जाने से सामाजिक भेदभाव बढ़ता ही जा रहा है । राजू नामक किन्नर माता-पिता से विमुख हो जाने के बाद मिलने के लिए घर आता है। परंतु समाज के डर से माता-पिता राजू के भाई राजू को पहचान लेने असमर्थता दिखाते है। घर में प्रवेश नहीं देते देखते ही ,घर के दरवाजे बंद करते हैं। राजू को देखते ही पिताजी उन्हें यह कहकर वापस जाने को कहते हैं। कि , "तू यहां क्यों आया ?वही चला जा जहां से आया"।11 कहते हैं कि, आदमी अपने रास्ते से भटक गया तो रास्ता ढूंढ कर घर लौटता है। परंतु सामाजिक व्यवस्था ऐसी है जिससे विवश होकर राजू जैसे किन्नरों को घर छोड़ देना पड़ता है। परंतु राजू जैसे किन्नरों को एक बार घर, परिवार और समाज से निकल जाते है तो उसके सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं। सामाजिक व्यवस्था के इस दोष के कारण कितने लोगों को परिवार एवं समाज से बहिष्कृत होना पड़ता है ,जिसके दर्द को राजू ने झेला है।

निष्कर्ष -

अपना दर्द यह कहानी राजू जैसे होनहार बच्चे की कहानी है जो आगे चलकर शारीरिक बदलावों के कारण किन्नरों की श्रेणी में आ जाता है । जिस प्रकार कहानी के नायक राजू जो एक किन्नर है उसे अपने माता-पिता से प्रेम है फिर भी सामाजिक दबाव के कारण घर, परिवार और समाज छोड़ देकर किन्नरों की बस्ती में रहने जाना पड़ता है। आगे चलकर यह किन्नर अपने पैरों पर खड़े भी होना चाहते हैं। जैसे राजू व्यवसाय में मेहनत से अच्छा - खासा धन कमाते हैं। जो भी उन्हें काम मिलता है उसे निष्ठापूर्वक निभाते हैं । साथ ही साथ स्वावलंबी बनने की कोशिश करते हैं। कुछ काम करना चाहते हैं परंतु सामाजिक ,राजकीय स्तर पर उदासीनता देखी जाती है कि, इन लोगों के रोजगार हेतु किसी भी प्रकार की सहायता नहीं की जाती बल्कि ऐसे क्षेत्रों में किन्नरों का अपमान भी किया जाता है। राजू जैसे किन्नर के माध्यम से कहानीकार ने राजू के जीवन की त्रासदी और उसकी समस्याओं को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ सूची –

1.लैंगिक विमर्श और यमदीप - हर्षिता द्विवेदी- अमन प्रकाशन,कानपुर 2020, पृष्ठ-क्रमांक - 88

2.डॉ.चैनसिंह मीणा , आलेख थर्ड जेंडर अस्मिता संघर्ष और वर्तमान परिदृश्य, सामायिक सरस्वती (अप्रैल - सितंबर 2018) पृष्ठ-क्रमांक - 62

3.हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके -राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक -122

4हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके - राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक -122

5. हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके -राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक -122

6.प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली- वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ-क्रमांक- 86

7.हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके -राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक-122

8.हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके -राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक-122

9.हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके -राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक -122

10. डॉ मोनिका शर्मा -अस्तित्व की तलाश, माया प्रकाशन, कानपुर, 2019 पृष्ठ-क्रमांक- 26

11.हिंदी कहानी साहित्य - संपादक डॉ.बी.आर.बोडके - राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष - 2024 पृष्ठ क्रमांक -122